सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र
3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली
भारत की एकमात्र बाल पत्रिका

शादी

*डॉ. श्रीकृष्णचन्द्र तिवारी 'राष्ट्रबंधु'

गुड्डे जी को बहुत शौक था,
लड़की करें पसंद।
गुड़ियावालों के घर खाते,
कलाकन्द सानन्द ।।
पांच किलो मीठा खाते थे,
तब होता जलपान।
लड़की उन्हें पसन्द न आती,
कर देते अपमान
इसी तरह से मौज उड़ाते
पा जाते थे भेंट।
जगह-जगह पर तरह-तरह से,
करते मटियामेट ।।
गुड़ियावालों ने मिल करके,
सोचा नया उपाय।
गुड्डे जी शादी करने को,
हो जाएँ निरुपाय ।।
यह दुल्हा दहेज लेता है,
करता है इनकार।
इस प्रचार ने उन्हें फँसाया,
बना दिया लाचार ।।
डर के मारे गुड्डे जी को,
करना पड़ा बिवाह।
अंधी, लूली, लँगड़ी, बूची,
गुड़िया दुल्हिन बाह ।।
बाराती दहेज-दानव से
इतने थे भयभीत
हवालात की हवा न खाने,
का चक्कर बिपरीत ।।
गुड़िया जी के पंख लग गए,
गुड्डे जी हैरान।
साथी संगी भूखे भागे
पकड़े पकड़े कान ।।

– कानपुर (उ.प्र.)